बुद्ध गीता
एवम्
बुद्ध स्तोत्र

Nijanand App

बुद्ध गीता
एवम्
बुद्ध स्तोत्र

संयोजक - 'धर्मवीर' 'जागनी रत्न'
जगदीश चन्द्र
संरक्षक - श्री निजानन्द आश्रम
रतनपुरी (उ0 प्र0)
एवम्
श्री निजानन्द आश्रम
बड़ोदरा (गुजरात)

Nijanand App

भूमिका

बुद्ध गीता-बुद्ध स्तोत्र

(श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप की गीता और उनके स्वरुप की पहचान का स्तोत्र)

प्राणों के आधार, आतम सम्बन्धी एवं अक्षरातीत श्री राजजी के लाडले श्री सुन्दर साथ जी तथा पाठक वृन्द! ये दोनों किताबें बुद्ध गीता और बुद्ध स्तोत्र किसी स्थान विशेष के किसी सामान्य व्यक्ति के द्वारा नहीं कहीं गयी है, बल्कि कलियुग में प्रकट होने वाले अक्षरातीत परब्रह्म के स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के बारे में जानने के लिये प्रबल इच्छा करने पर नारद जी को ब्रह्मा जी ने बुद्ध गीता तथा उमा को शंकर जी ने बुद्ध-स्तोत्र सुनाया था। इन ग्रन्थों का आजकल मिलना कठिन प्रतीत होता है।

जब स्वयं श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार भविष्यवाणियों के अनुसार वि0 सं0 1735 में हरिद्वार में

जाहिर हो गये तो अपनी आत्माओं की जागनी के कार्य के लिये औरंगाबाद में पहुँचे। वहाँ पर अपने एक सुन्दर साथ श्री भवानी भट्ट जी इन दोनों ग्रन्थों को दक्षिण से लेकर आये थे तथा श्री जी की आज्ञा से डेढ़ पहर तक उसकी चर्चा सुनाते थे।

इन समें भट्ट भवानी, था उदयपुर का मिलाप ।
सो इत आए मिल्या, थी भवानी प्रसन्न आप ॥

बुद्ध गीता बुद्ध स्तोत्र, ए ल्याया दक्षिण से ।
इन समें मुजरा किया, सुख पाया इन में ॥

भवानी भट्ट डेढ़ पहर लों, कथा कह होए फारग ।
तब श्री राज आरोग के, पौढ़ें सेज बुजरक ॥

बी0 सा0 53/53,54,62

इन ग्रन्थों के द्वारा श्री सुन्दर साथ जी को श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप श्री प्राणनाथ जी की पहचान होती है। परब्रह्म की वास्तविक पहचान न होने के कारण ही नाम, तत्व, गुण वाले भगवान या त्रिदेवा को यह भटका हुआ संसार अक्षरातीत कहता है। अक्षरातीत परब्रह्म तो केवल एक हैं, जिसका प्रमाण सभी धर्म ग्रन्थों में दिया गया है।

एकमेव अद्वितीयम्। (ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण) अर्थात्

Nijanand App

परब्रह्म मात्र एक ही है और कोई भी दूसरा उसके समान नहीं है।

उत्तमः पुरुषः तु अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः ।

श्रीमद्भगवत् गीता ॥ 15/17 ॥

अर्थात् एकमात्र उत्तम पुरुष अक्षरातीत ही परब्रह्म है।

बाईबिल के कथनानुसार - SUPRIME TRUTH GOD IS ONLY ONE.

कुरान के अनुसार भी **'कुल्ल हू अल्ला अहद'** तथा गुरु ग्रन्थ साहब में भी **'नानक एको सुमिरिये'** कहा गया है।

अपने गुमान और अहंकार में डूबने से भटके हुए अगुओं के पीछे चलकर अपने इस हीरा जन्म को निष्फल नहीं करना चाहिए। श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप श्री प्राणनाथ जी अपनी जागृत बुद्धि एवं निज बुद्धि के ज्ञान रुपी तेजोमयी सूर्य के समान जाहिर हो चुके हैं। कृपया अपनी आत्मा को उनके जागृत बुद्धि एवं निज बुद्धि के ज्ञान से जगाकर उनकी पहचान करें, और उनसे अपनी आत्मा का पतिव्रता-सम्बन्ध का नाता जोड़ कर अपने अखण्ड धाम का मार्ग प्राप्त करें। यदि आपने भी अपने झूठे मान-गुमान में आकर जीवन के इस अनमोल अवसर

को गवां दिया तो यह नहीं कहना कि श्री प्राणनाथ जी के साथी आये थे, और उन्होंने मुझे सावचेत नहीं किया। अपने धनी के फुरमान का पालन करने के लिये मैंने ये दो शब्द आपके चरणों में हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा है।

आपकी चरण-रज
'धर्मवीर' 'जागनी रत्न'
जगदीश चन्द्र
संरक्षक - श्री निजानन्द आश्रम
रतनपुरी (उ0 प्र0)
एवम्
श्री निजानन्द आश्रम
बड़ोदरा (गुजरात)

Nijanand App

अथ बुद्धगीता लिख्यते

अथर्ववेद श्रुतिः

ऊँ बुद्धो वै भविष्यति यदा तदा सर्व वै बुद्धि मद्भविष्यति ज्ञानी चाज्ञानी वै भविष्यति पशुश्चापशुश्च सर्वज्ञो वै जायेत। यदा वै भविष्यति बुद्धः सच्चासच्च वै सर्वं सद्भविष्यति। यदौ वै बुद्धो भविष्यत्यसौ गवः सांगतोहर्ठः अस्ति सर्वं वै ज्ञानमयं भविष्यति। तत्सत्तत्सत्तत्सदिति वदन्ति वेदाः, इति श्रुतिः।

पदार्थ- जब श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक प्रकट होंगे, तब प्रत्येक व्यक्ति बुद्धिमान होगा। ज्ञानी और अज्ञानी, पशु और अपशु, प्रत्येक ही सर्व तत्वों को जानने वाला होगा। जिस समय बुद्ध जी होंगे, उस समय व्यक्त और अव्यक्त सम्पूर्ण जगत ही अखण्ड हो जायेगा तथा जिस समय वे प्रकट होगें, उस समय इस पृथ्वी का जो अज्ञानमयी अन्धकार है, वह ज्ञान से पूर्ण हो जायेगा। वह सत्य है, वह सत्य है, वह सत्य है, ऐसा वेद कहते हैं।

भावार्थ- जब पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द 'श्री प्राणनाथ जी'

इस दुनिया में 'श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप' में जाहिर होंगे, तो उनके द्वारा लाये हुए अलौकिक ज्ञान का अनुकरण करके हर मनुष्य ब्रह्म तत्व के विषय में सब कुछ जानने वाला हो जायेगा। उनके जागृत ज्ञान से सबका अहंकार दूर हो जायेगा। यह सम्पूर्ण दृश्यमान जगत एवं कारण रुप अदृश्य जगत योगमाया के ब्रह्माण्ड में हमेशा के लिये अखण्ड हो जायेगा, अर्थात् चर-अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ही अखण्ड मुक्ति मिलेगी। सच्चिदानन्द परब्रह्म के ज्ञान से ही सबको मुक्ति मिलती हैं, ऐसा वेदों का निश्चित मत है।

त्रेता वै त्रिगुणायुषं भुनक्ति। द्वापरो द्विगुणं चायुषं भुक्त्वा तिष्ठेत। सत्यं सत्येनाधितिष्ठति। कलिश्चायं क्षीयेत। तद्वतु प्रायश्चित्तत्वात् प्राग्गदित्वात्सहस्रांशः क्षीयेत सहस्रांश स्तिष्ठति वा न वा।

ऋग्वेदोपनिषद् श्रुतिः ॥ 2 ॥

पदार्थ- त्रेता युग अपनी सम्पूर्ण आयु (कलियुग की तिगुनी) का भोग करता है। द्वापर भी अपनी सम्पूर्ण आयु (कलियुग की दूगुनी) को भोगकर स्थित रहता है। सत्य युग एक मात्र सत्य के आधार में ही स्थित रहता है, किन्तु यह कलियुग नष्ट होता रहता है। इस प्रकार पापों के प्रायश्चित स्वरुप पूर्व कथनानुसार या तो इसका हजारवां

Nijanand App

भाग नष्ट हो सकता है या सम्पूर्ण भाग नष्ट होकर केवल हजारवां भाग ही बचा रह सकता है, या वह भी नहीं रह सकता है, ऐसा ऋग्वेदोपनिषद् की श्रुति कहती है।

भावार्थ- सत्ययुग में धर्म अपने चारों चरणों पर स्थित रहता है इसलिये वह कलियुग की चार गुनी उम्र **(432000 x 4 = 1728000 वर्ष)** का भोग करता है। त्रेता में धर्म तीन चरणों पर स्थित रहता है, इसलिये उसकी उम्र 1296000 वर्ष होती है। द्वापर में धर्म दो चरणों पर स्थित होता है, इसलिये उसकी उम्र 864000 वर्ष होती है। कलियुग में धर्म का केवल एक ही चरण स्थित होता है, अतः पापों के कारण कलियुग अपनी सम्पूर्ण आयु 432000 को भोग नहीं पाता है। पापों के कारण उसकी आयु क्षीण हो जाती है।

सास्त्रें आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार ।

काटे दिन पापें लिख्या माहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार ॥

सोलै सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस ।

बैठाने साका विजिया अभिनन्द का, यों कहे सास्त्र

और जोतिस ॥

किरंतन 58/16,18

रुद्रयामल तन्त्र के कथनानुसार कलियुग की उम्र पापों के कारण सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के हिसाब से भी कट जाती है। एक ग्रहण के लगने से 125 वर्ष कम हो जाते हैं। सम्पूर्ण कलियुग में 3412 ग्रहण पड़ने हैं। इसलिये **3412 x 125 = 426500, 432000 - 426500 = 5500 वर्ष**

इस प्रकार कलियुग की उम्र में केवल 5500 वर्ष ही शेष बचते हैं।

ऊँ यदलौकिकं तेजोमयं तत्वं परं ब्रह्म यदुदाह्रियते तत्सत्यं परं धाम यत्तद्वै विवर्ण्यते तस्माज्जाता महानिद्रा मोहमयी तस्यां च वै भ्रमंत्यनामिकाः तस्याश्च वै त्रिगुणाः समभवन् सत्वरजस्तमस इति संज्ञकाः त्रिगुणेभ्यश्चातीता महानिद्रा तस्याश्चातीतं परं ब्रह्म यदलौकिकं गीयते वेदैस्तस्मादेव प्रजातो वै बुद्धः परं तेजोमयः सर्वज्ञः कर्ता स स्वयं समभवत्तद्रूपं वै विवर्ण्यते द्विपादो द्विहस्तः परः पुरुषः संभविष्यति तृतीयेन चराचरं सद्रूपं रचयति स्वयं क्रीडन् ऋग्भिर्भुवि ऋग्वेदोपनिषच्छ्रुतिः

॥ 3 ॥

पदार्थ– अ + उ + म + ् + . को ओ३म् कहा जाता

Nijanand App

है। यह ब्रह्म का वाचक नाम है। जो अलौकिक तेजोमय तत्व है, वह ही परब्रह्म कहा जाता है। वह ही सत्य है, सर्वश्रेष्ठ धाम है, जिसका अब वर्णन किया जाता है। उनके सत् अंग से मोहमयी महानिद्रा उत्पन्न हुई और उसमें ही जीव भ्रमित होते हैं। उस मोहनिद्रा से ही सत्व, रज और तम नाम वाले तीन गुण उत्पन्न हुए। वह महानिद्रा इन तीनों गुणों से परे है और उससे भी परे वह परब्रह्म है जो वेदों के द्वारा अलौकिक (माया रहित) कहा जाता है। उस परब्रह्म से ही बुद्ध जी का स्वरुप प्रगट होना है। वह अत्यन्त तेजोमय, सभी तत्वों को जानने वाले और सबके कर्ता हैं, अर्थात् उनको बनाने वाला कोई भी नहीं है। अब उनका रुप इस प्रकार वर्णित किया जाता है। सबसे परे के स्वरुप वाले वह पुरुष दो पैरों एवं दो हाथों को धारण किए हुए प्रकट होंगे। वे ऋचाओं के साथ क्रीड़ा करते हुए अपने तीसरे स्वरुप के द्वारा चर-अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे।

भावार्थ– अक्षर ब्रह्म मन-वाणी से परे है। उनके मन के सपने का स्वरुप आदि नारायण है, जिन्हें ऊँ के वाचक नाम के द्वारा कहा जाता है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ईश्वर तथा सदाशिव का समावेश है। परबह्म सत् चित् एवं आनन्दमयी है। उनके सत् अंग अक्षर ब्रह्म के चित्त (सबलिक

ब्रह्म) के स्थूल में स्थित सुमंगला शक्ति के द्वारा मोहमयी नींद का विस्तार होता है। उससे तीन गुणों सत्व, रज एवं तम की उत्पत्ति होती है। सच्चिदानन्द परबह्म एवं अक्षर ब्रह्म का स्वरुप इस मोहमयी नींद से परे ही होता है। प्राय: सभी धर्म ग्रन्थों में कलियुग में प्रकट होने वाले परब्रह्म को श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रुप में वर्णन किया गया है। यद्यपि परब्रह्म का कभी अवतार नहीं होता, किन्तु धर्म ग्रन्थों में उनके प्रकटन के लिये इसी नाम का प्रयोग किया गया है। 'श्री कुलजम स्वरुप' (स्वसंवेद) की वाणी उनका तीसरा ज्ञानमयी चक्षु है, जिसके द्वारा यह सारा ब्रह्माण्ड योगमाया में अखण्ड होगा। वे परब्रह्म श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप में जाहिर होकर अपनी ऋचा रुपी सखियों (आत्माओं) के साथ जागनी रास की लीला करेंगे, ऐसा बुद्ध गीता में कहा गया है।

बुद्धो वै प्राक् बुद्धो वै प्राक् सर्वेभ्यश्च प्रवर्तते, तस्मादतीतं न किंचिद्वै वर्तते। हंसमय: स एवं आदिपुरुषस्तस्मान्न किंचिदतीतं नेति नेति वदन्ति वेदा:, एतद्वै सत्यं वै सत्यं सत्येयं वाक् सत्येयं सत्येयं प्राग्विवर्णितं सत्यं तत्सत् इति ।

॥ 4 ॥

पदार्थ- निश्चित रुप से ये विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक

Nijanand App

जी ही सबसे पहले से विराजमान पुरुष (परब्रह्म) हैं। उनसे (अक्षरातीत) परे कुछ भी स्थित नहीं है। अति शुद्ध स्वरुप वाले वे ही सर्वप्रथम पुरुष हैं। उनसे परे अन्य कोई भी नहीं है। वेद उन्हें ही नेति-नेति कहते हैं। वेद का यह कथन निश्चित रुप से सत्य है। श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही सर्वप्रथम एवं अनादि पुरुष हैं। पहले कही हुई यह बात पूर्ण रुप से सत्य है, सत्य है।

भावार्थ- कलियुग में जिस अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म को श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रुप में प्रकट होना है, वे ही सबसे पहले के अनादि पुरुष अक्षरातीत हैं। उनसे परे कुछ भी नहीं है। वेदों ने भी उन्हें ही नेति-नेति कहकर पुकारा है।

एषौ वै संभविष्यति संभावयन्प्रजा: ॐ प्रजाश्च तद्रूपा: संभविष्यन्ति सद्बुद्धय: सत्कर्मयुक्तास्तद्भवास्तन्मयास्ता भिर्वर्तयिष्यति ।

॥ 5 ॥

पदार्थ- ये विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही प्रजाओं के प्रति प्रेम करते हुए प्रकट होंगे और वे प्रजायें भी उनके ही समान सत्य (जागृत) बुद्धि वाली होंगी। श्रेष्ठ कर्म करने वाली वे प्रजायें उनसे ही प्रकट होंगी एवं उनका ही स्वरुप होंगी। उनके साथ श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी लीला करेंगें।

भावार्थ– प्रजायें और कोई नहीं, बल्कि परमधाम की वे आत्मायें ही हैं, जिनके साथ परब्रह्म स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक जी लीला करेंगे। परमधाम की वे ब्रह्म सृष्टियां सच्चिदानन्द परब्रह्म के साक्षात् तन हैं, इसलिये उनमें और परब्रह्म में कोई भी अन्तर नहीं है।

ब्रह्म सृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान ।
कई विध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान।।

किरंतन 62/4

वे सारी आत्मायें (सखियां) जब इस ब्रह्माण्ड में प्रकट होंगी, तो उनके साथ भी वही निज बुद्धि होगी, जो श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के पास होगी ।

ऊँ तत् धीमहि तत् धीमहि परं धाम चालौकिकं तत्सवर्ण्यं ह्यग्राह्यं चास्पृष्टयं चादाह्यं चाक्लेश्यं यद्वै विवर्ण्यते तदेतत् द्विभुजं द्विपदं द्विनेत्रं चादिपुरुषं तं चैवाधिभजे।

॥ 6 ॥

पदार्थ– हम सब उस अलौकिक परमधाम का ध्यान करें। उस परमधाम के समान ही इन्द्रियों से ग्रहण न होने वाला, स्पर्श से रहित, जलन से रहित तथा सम्पूर्ण क्लेशों से रहित गुण वाला वह परब्रह्म है, जिनका वर्णन किया

Nijanand App

जाता है कि वह दो भुजा, दो पैर तथा दो नेत्रों वाले हैं। ऐसे लक्षणों वाले उस आदि पुरुष को मैं भजता हूँ।

भावार्थ– परब्रह्म का स्वरुप तथा धाम मन, वाणी, एवं इन्द्रियों से रहित है। वह सम्पूर्ण कष्टों से परे है। अक्षरातीत का स्वरुप दो भुजा और दो नेत्रों वाला है। ऐसे लक्षणों वाले उस परब्रह्म का भजन करना चाहिए।

ऊँ नमः ऊँ आदिराट् ऊँ आदिराट् ऊँ आदिराट् स्वयं भूर्भूवि भविष्यति स्वयं वै यज्ञो वै स्वयं त्राता स्वयं षटकः स्वयं वनराट् स्वयं वै स्वनयः तेजोमयो भविष्यति क्रीडयन् ऋग्भिरिति ।

॥ 7 ॥

पदार्थ– सबसे पहले से विराजमान स्वरुप वाले, उस अनादि अक्षरातीत परब्रह्म को प्रणाम है। एक मात्र वे ही इस पृथ्वी पर यज्ञस्वरुप होंगे। इस भवसागर के अन्दर विषय रुपी घड़ियाल आदि से रक्षा करने वाले वे ही होंगे। वे छः गुणों से युक्त होंगे एवं मोह रुपी पशु को मारने वाले सिंह के समान होंगे। निश्चित रुप से वे श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही अपनी आत्माओं को निजधाम ले जाने वाले होंगे। अपनी आत्माओं के साथ क्रीड़ा करते हुए वे बुद्ध जी अत्यन्त तेजोमय स्वरुप वाले होंगे।

भावार्थ- अनादि परब्रह्म से पहले कोई भी नहीं था। वे ही सच्चिदानन्द परब्रह्म, इस ब्रह्मांड में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक के स्वरुप में प्रकट होंगे। ब्रह्माग्नि (परब्रह्म के प्रेम) में आत्मा रुपी हविष्य की आहुति से परमधाम के सुख की लज्जत मिलती है, किन्तु ऐसा होना श्री बुद्ध जी के दिये हुए ज्ञान (श्री कुलजम स्वरुप की वाणी) से ही सम्भव है, इसलिये उन्हें यज्ञस्वरुप कहा गया है। श्री बुद्ध जी का ज्ञान मायावी विकारों से बचने के लिये सचेत करने वाला है तथा उनके प्रति की जाने वाली अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति विकारों से रक्षा करती है। अतः उन्हें रक्षक भी कहा गया है। परब्रह्म में सत्, चित्, आनन्द, इश्क, अनन्त और स्वलीला अद्वैत ये छः गुण हमेशा ही परिपूर्ण रहते हैं। मोह के कारण जीव का स्वभाव धर्म से रहित होकर पशुतुल्य हो जाता है। उसे मारने के लिये वे सिंह के समान कहे गये हैं। ऋचाओं को ही आत्मा, सखियां, ब्रह्मसृष्टि तथा वेद की भाषा में अनादि प्रजायें (शाश्वती समाः) कहा गया है। इनके साथ ही श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी की जागनी लीला होगी अर्थात् वे अपनी आत्माओं को प्रबोधित करके अपने परमधाम में ले जायेंगे।

ऊँ ज्योतिर्मयः ऊँ ज्योतिर्मयः ऊँ ज्योतिर्मयो ज्योतिर्भिः स्वयं क्रीडयिष्यति योषिताभिः योषिताश्च तन्मयाः

Nijanand App

संभविष्यन्ति ताश्च वै ऋक् रुपिण्यः संक्रीडयिष्यन्ति तेजोमयेन इति श्रुतिः ।

॥ 8 ॥

पदार्थ- चैतन्य स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही उन चैतन्य स्वरुप वाली सखियों (आत्माओं) के साथ स्वयं जागनी की लीला करेंगे। वे आत्मायें उनका ही स्वरुप होंगी और तेजोमय स्वरुप वाले श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के साथ वे आत्मायें भी क्रीड़ा करेंगी।

भावार्थ- अक्षरातीत परब्रह्म तथा उनकी आत्माओं में वही सम्बन्ध है, जो सूर्य और उसकी किरणों तथा सागर एवं उसकी लहरों में होता है। किरणें सूर्य का ही स्वरुप होती है, तथा लहरें भी सागर का ही स्वरुप होती हैं। इसी प्रकार आत्मायें भी परब्रह्म का ही स्वरुप हैं।

तुम सब रुहें मेरे तन हो, तुम सो इस्क जो मेरे दिल।
ए क्योंकर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल॥
खिलवत 11/7

वेद की ऋचायें वेद की ही अंगीभूत स्वरुपा हैं और वैसी ही पवित्र हैं। इसलिये परमधाम की आत्माओं को ऋचा कहकर बार-बार सम्बोधित किया गया है। जब अक्षरातीत इस नश्वर जगत में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध

निष्कलंक के स्वरुप में प्रगट होंगे और उनकी आत्मायें भी इस दुनिया में आकर जब अपने परमधाम को भूल जायेंगी, तो अक्षरातीत अपने निज बुद्धि के ज्ञान द्वारा उन्हें प्रबोधित करेंगे। इसे ही सखियों की श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के साथ होने वाली जागनी लीला कही गयी है।

संजातं चादिपुरुषं कल्की चैव अभिरोहयिष्यति कल्की तदंशस्तदारोहणात्तेजोमयः स चादिपुरुषं संरोहयन्कल्की विकलंकां रचयिष्यति महीम् ।

॥ 9 ॥

पदार्थ- प्रकट होने वाले इस अनादि अक्षरातीत पुरुष को अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि रुपी घोड़ा अपने ऊपर सवार करायेगा। वह घोड़ा उन्हीं का अंश रुप है। परब्रह्म के सवार होने से वह तेजोमय होगा। परब्रह्म को अपने ऊपर चढ़ाकर वह घोड़ा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को कलंक रहित कर देगा।

भावार्थ- अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि को घोड़ा कहा गया है। अक्षर ब्रह्म, परब्रह्म के सत् अंग है, इसलिये अक्षर-ब्रह्म की बुद्धि को उनके अंश रुप में माना गया है। यद्यपि परब्रह्म से अंश-अंशी का भाव मानना उचित नहीं है, किन्तु एक ही अखण्ड धाम में स्थित होने के कारण ऐसा कहा गया है। अक्षरातीत की शरण में आने के कारण अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि को परमधाम के उन रहस्यों का

Nijanand App

पता चल जायेगा, जो अब तक नहीं था।

मेरी संगतें ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर ।
तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर ॥

क0 हि0 23/103

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पोहोंचे तित।
मेरे हिरदे चरन धनी के, इनें ए फल पाया इत ॥

प्र0 हि0 20/15

अक्षरातीत परब्रह्म के आवेश को पाकर अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि इस ब्रह्माण्ड के अज्ञान को दूर करके इसे कलंक रहित बनायेगी, तभी सारे प्राणी योगमाया में अखण्ड हो सकेंगे।

विष्णुश्चैवादिविष्णुरेवान्यस्य वै कले यद्वै जननसमये वसुदेवाय दत्तं तत्तेजोमयं परं वैष्णवं रुपं यन्नीतं तस्मात्तद्भिन्नं यदा वै येन कृता लीला ऋग्भिस्तदेवालौकिकं परं ज्योतिर्मयमुच्यते येन वै कृतो मंडलरासस्तदेव भिन्नं समागमतेजोमयाद्यदक्षरातीतं वर्णितं स्थानत्रयी तेजोमयमन्यत्र तद्रूपं तत्सत् ।

॥ 10 ॥

पदार्थ- विष्णु एवं आदि विष्णु का स्वरुप एक ही है। इनसे भिन्न जो अक्षर ब्रह्म हैं, उनकी ये स्वप्न में कला

रुप हैं। जन्म के समय जो वसुदेव को पुत्र के रुप में प्राप्त हुआ था, वह विष्णु भगवान का परम तेजोमय स्वरुप था। जो जेल से गोकुल में ले जाया गया था, वह उनसे भी भिन्न गोलोकी शक्ति का स्वरुप था। ब्रज में जिसने सखियों के साथ लीला की, वह परम ज्योतिमय अलौकिक अक्षर ब्रह्म का स्वरुप था। जिसने योगमाया के अन्दर रास की लीला की, वह अक्षर ब्रह्म की आत्मा से युक्त अक्षरातीत की शक्ति के द्वारा किया हुआ कहा गया (अब उनमें अक्षरातीत का आवेश नहीं हैं)। इस प्रकार विष्णु, अक्षर ब्रह्म एवं अक्षरातीत की प्रतिभासिक लीला के ये तीन स्थान हैं, किन्तु परब्रह्म अक्षरातीत की वास्तविक लीला का तेजोमय स्थान इनसे भिन्न ही है, जो उनके ही समान चेतन रुप वाला तथा अखण्ड है।

भावार्थ– अक्षर ब्रह्म के मन अव्याकृत के सपने का स्वरुप आदि विष्णु या आदिनारायण है। मथुरा में जेल के अन्दर देवकी के गर्भ में बैकुण्ठ वासी विष्णु भगवान ने जन्म लिया था।

अवतार एक श्री कृष्ण का, मूल मथुरा प्रगटया जेह ।
दीदार देवकी वसुदेव को, दिया चतुरभुज एह ॥

क0 हि0 18/12

किन्तु, वसुदेव जी दो भुजा के स्वरुप वाले जिस बालक

Nijanand App

को गोकुल में ले गये, उसमें अखण्ड गोलोक की शक्ति थी।

वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार ।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार ॥

क0 हि0 18/14

यशोदा जी के घर आ जाने पर अक्षर ब्रह्म की आत्मा ने परब्रह्म के आवेश के साथ उस बालक के तन में प्रवेश किया

मूल सूरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह ।
सो सूरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस ॥

प्र0 हि0 37/29

ब्रज एवं रास में अक्षर ब्रह्म की आत्मा के साथ धनी का आवेश था, किन्तु ब्रज की लीला को अक्षर ब्रह्म के साथ तथा रास की लीला को अक्षरातीत के साथ जोड़ने का कारण यही है कि ब्रज में अनेकों राक्षसों के संहार की भी लीला हुई, किन्तु रास में शुद्ध प्रेम के विलास की लीला हुई। रास की लीला नित्य वृन्दावन में हुई। इन सभी स्थानों से परे अक्षरातीत का वह अनादि परमधाम है, जो उन्हीं के समान इश्कमयी और आनन्दमयी है।

✦ यह बुद्ध गीता सम्पूर्ण हुई ✦

।। अथ बुद्धगीता लिख्यते ।।

अब बुद्धगीता (द्वितीय) लिखी जाती है। (यह बुद्धगीता भविष्योत्तर पुराण के अन्तर्गत है, जबकि इसके पूर्व की बुद्ध गीता किसी अन्य ग्रन्थ का अंश है।

परं नत्वा धाम श्रवण विपथं मंगलमयं महत्तेजोरुपं त्रिगुण रहितं चादिपुरुषम् ।

समं वन्दे वन्दे विगतकपटं केवलमयम् महाधाम्नो भिन्नं विशद विमलाकारसहितम् ।।

।। 1 ।।

श्रेष्ठ स्वरुप वाले, श्रवण में न आने वाले, कल्याणकारी, अत्यधिक तेजोमय स्वरुप वाले, त्रिगुणातीत और सर्वप्रथम पुरुष के रुप में विराजमान अक्षरातीत परब्रह्म को प्रणाम करके मैं उनकी वन्दना करता हूँ। इसके साथ ही दिव्य ब्रह्मपुर धाम में स्थित, अक्षरातीत से भिन्न, माया से रहित, एकरस, और अत्यधिक निर्मल स्वरुप वाले उस अक्षर ब्रह्म की मैं वन्दना करता हूँ।

Nijanand App

परं नत्वा मायां परिभवित गोल प्रमुदितां महत्तत्वोपेतां परिगदति निद्रा इति बुधः ।

श्रृणु त्वं वक्ष्येऽहं विशदगदितां बुद्धि निरतां समांगीं तां वक्ष्ये विमलयतु चेतस्तव इति ।।

।। 2 ।।

ब्रह्मा जी कहते है- निराकार से परे विराजमान उस अक्षर ब्रह्म को प्रणाम करके उस माया के विषय में मैं तुमसे कहता हूँ, जो समस्त ब्रह्माण्डों को प्रसन्नतापूर्वक अपने वश में करने वाली है तथा महत्तत्व को उत्पन्न करने वाली है। ज्ञानी जनों के द्वारा वह नींद कही जाती है। हे पुत्र! तुम उसे सुनो। अक्षर ब्रह्म के बेहद धाम में अपने मूल परा स्वरुप से निर्मल कही जाने वाली, सबकी बुद्धि का स्वरुप, ब्रह्म की सत्ता की अंगभूता उस माया के विषय में मैं तुमसे कहता हूँ, जिससे तुम्हारा हृदय निर्मल हो सके। (अखण्ड माया का मूल स्वरुप बेहद के अन्दर सबलिक ब्रह्म में स्थित है)

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम ।।

किरंतन 65/10

।। ब्रह्मोवाच ।।

ब्रह्मा जी ने कहा-

शृणु पुत्र! प्रवक्ष्यामि तवाग्रे तत्वमुत्तमम् ।
नानाविभेद बुद्धिघ्नं श्रुत्वा च स्ववधारय ॥

॥ 3 ॥

हे पुत्र! सुनो। मैं तुमसे उस परम तत्व के विषय में कहता हूँ। अनेक प्रकार की भेद बुद्धि को नष्ट करने वाले उस तत्व ज्ञान को सुनकर उसे अपने हृदय में धारण करो।

स्थिरेण चेतसा चैव तज्ज्ञानं नान्यथा भवेत् ।
इति हेतोस्त्वया पुत्र स्थितिर्धर्मस्य नीयताम् ॥

॥ 4 ॥

स्थिर मन से ही वह तत्वज्ञान प्राप्त हो सकता है, अन्यथा नहीं। इसलिये हे पुत्र नारद! तुम्हें अपने हृदय में धर्म की शुद्ध स्थिति को ग्रहण करना चाहिए।

परं धाम परं ज्योतिर्यदुदाह्रियते महत् ।
तेजोमयं निराकारं ह्यकथ्यं त्रिगुणैरपि ॥

॥ 5 ॥

परमधाम शुद्ध ज्योतिर्मय है और वह महान कहा जाता है। त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) भी उस सच्चिदानन्द परब्रह्म को तेजोमय, निराकार (प्राकृतिक रुप से रहित)एवं शब्दातीत कहते हैं।

Nijanand App

अक्षरातीतमेतद्धि यस्मानान्यद्धि वर्तते।
अलौकिकं परंधाम तस्मादक्षर एव हि ॥

॥ 6 ॥

निश्चित रुप से अक्षरातीत ही परब्रह्म हैं, जिनके परे अन्य कुछ भी नहीं हैं। वह परमधाम अलौकिक है और उस अक्षरातीत से ही अक्षर ब्रह्म का भी स्वरुप है। (अक्षर और अक्षरातीत दोनों ही अनादि हैं, क्योंकि अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत के ही सत् अंग है)

अधः प्रोक्तः परश्चैव ह्यक्षरश्च परात्परः ।
तस्माज्जाता महानिद्रा चेच्छाशक्त्या सुमंगला ॥

॥ 7 ॥

वह अक्षर ब्रह्म उस अक्षरातीत से नीचे अर्थात् अक्षर धाम में विराजमान कहे गये हैं। वह बेहद से परे अर्थात हद के परे के परे हैं। हद पार बेहद है, बेहद पार अछर। उस अक्षर ब्रह्म की इच्छा शक्ति सुमंगला है, जिससे महानिद्रा (मोह, अज्ञान) प्रकट हुई।

निद्रायां च समुत्पन्ना ब्रह्मा विष्णुमहेश्वराः ।
लीने लीना गुणे ह्येते तथा भूतानि नारद ॥

॥ 8 ॥

हे नारद! मोहरुपी नींद में ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। नींद के अपने कारण में लीन हो जाने पर ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सभी प्राणी भी उसी में लीन हो जाते हैं।

तस्याश्चातीतमेतद्धि अक्षरे यत्पुरा स्मृतम् ।
तस्माच्चैवाक्षरात्पुत्र अतीतो बुद्ध एव हि ॥

॥ 9 ॥

यह अक्षर ब्रह्म उस मोह रुपी नींद से परे हैं। इस कथन का वर्णन पहले किया जा चुका है। हे पुत्र! किन्तु बुद्ध जी तो उस अक्षर ब्रह्म से भी परे हैं। (अक्षरातीत के प्रकटन को ही धर्म ग्रन्थों में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रुप में वर्णन किया गया है)

तस्य रुपं प्रवक्ष्यामि परं ज्योतिः स्वरुपकम् ।
द्विहस्तं च त्रिनेत्रं च द्विपदं शान्तिरुपकम् ॥

॥ 10 ॥

अब मैं उनके रुप का वर्णन करता हूँ, जो परम् ज्योतिः स्वरुप (ज्ञानमयी) हैं। शान्तिमय स्वरुप वाले वे बुद्ध जी दो हाथों, दो पैरों, तथा तीन नेत्रों से युक्त हैं। (उनकी वाणी श्री कुलजम स्वरुप या स्वसंवेद ही उनका तीसरा नेत्र है)

Nijanand App

एकमूलं शुद्ध वर्णे त्रिभेद रहितं नरम् ।
यत्र भेदा प्रलीयन्ते स्वकीयाः परकीयकाः ॥

॥ 11 ॥

स्वलीला अद्वैत का सिद्धान्त ही उनका मूल है। वह माया जन्य विकारों से रहित, 'स्वजाति, विजाति एवं अपने आन्तरिक' इन तीनों भेदों से रहित परम् पुरुष स्वरुप वह बुद्ध जी ही हैं, जिनमें अपने और पराये के भेद नष्ट हो जाते हैं।

एतद्रूपं समन्ताच्च कल्पादौ संभविष्यति ।
तदा न वर्णावर्णश्चि विभेदो ज्वलति ह्ययम् ॥

॥12॥

वाराह कल्प के अट्ठाइसवें कलियुग के प्रारम्भ में ही श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का यह स्वरुप प्रकट होगा। तब सर्वत्र ही अपने और पराये का यह भेद नहीं हो सकता है। (इस जगत में श्री बुद्ध जी के ज्ञान को अपने हृदय में धारण करने वालों में ही अपने और पराये का भेद नहीं रहेगा। वास्तविक समानता तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में ही होगी।)

न दानं न फलं तस्य दानस्यैव ह्युदाहृतम् ।
तदा ज्ञानमयं चैव भविष्यति सुनिश्चितम् ॥

॥ 13 ॥

उस समय दान और उसका फल जो स्वर्ग आदि का सुख कहा गया है, वह प्राप्त नहीं होगा, बल्कि दान के पुण्य स्वरुप श्री बुद्ध जी का ज्ञान प्राप्त होगा, जो अखण्ड मुक्ति को प्राप्त कराने वाला है। ऐसा निश्चित है।

चरं चैवाचरं चैव ज्ञाननिष्ठं न संशयः ।
सुरश्चैवासुरश्चैव ह्येकीभूतगणस्तथा ॥
न भेदः खलु जायेत यदा बुद्धो भविष्यति ॥

॥ 14 ॥

जब श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी प्रकट होंगे, तो उस समय चर एवं अचर सभी प्राणी जागृत बुद्धि के दिव्य ज्ञान में सराबोर हो जायेगें, इस बात में कोई भी संशय नहीं है। हिन्दू और मुसलमान भी एक रुप हो जायेंगे अर्थात् उनकी ब्रह्मसम्बन्धी धारणा एक समान हो जायेगी तथा उनमें किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रह जायेगा ।

न शूद्रो न द्विजश्चैव न गावः शूकरस्तथा ।
ये ये भेदाः प्रवक्ष्यन्ते क्षयं यास्यन्ति निश्चितम् ॥

॥ 15 ॥

Nijanand App

इस समय शुद्र, ब्राह्मण, गाय और सूअर में जो भेद कहे जाते हैं, श्री बुद्ध जी के प्रकट होने पर ये सभी भेद नष्ट हो जायेंगे, ऐसा निश्चित है।

बुद्धः सुबुद्धिकर्ता च ह्यादिरुपो न संशयः ।
तेजोमयः परः साक्षात्पुरुषः परमो हितः ॥

॥ 16 ॥

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी सबकी बुद्धि को सुन्दर करने वाले हैं अर्थात् सबको जागृत बुद्धि प्रदान करने वाले हैं। ये परब्रह्म के ही स्वरुप हैं। ये अत्यन्त तेजोमय हैं एवं अक्षर ब्रह्म के भी परे के साक्षात् परम पुरुष हैं। ये सभी प्राणियों का परम कल्याण करने वाले हैं। इस कथन में कोई भी संशय नहीं है।

अक्षरातीत एषो वै पुरुषो बुद्ध उच्यते ।
तेजोमयश्चादिरुपस्तस्यावतार उच्यते ॥

॥ 17 ॥

यह श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी (श्री प्राणनाथ जी) ही अक्षरातीत पुरुष कहे जाते हैं। ये अत्यन्त तेजोमय हैं तथा मूल स्वरुप परब्रह्म के निज स्वरुप कहे जाते हैं।

ज्योतिर्मयः परः प्रोक्तो बुद्धो बुद्धस्वरुपधृक ।
सर्वेषां बुद्धिदाता च ज्योतिर्मय उदाहृतः ॥

॥ 18 ॥

जागृत तथा निज बुद्धि की शक्ति को अपने अन्दर धारण करने वाले बुद्ध जी शुद्ध ज्ञानस्वरुप कहे जाते हैं। ये सबको जागृत बुद्धि देने वाले हैं, इसलिये ये ब्रह्मज्ञान का ज्योतिर्मय स्वरुप कहे जाते हैं।

एतत्पुत्र प्रवक्ष्यामि ह्यादिरुपस्य लक्षणम् ।
चिन्तनीयं प्रयत्नेन स्मरणीयं परात्परम् ॥

॥ 19 ॥

हे पुत्र! परब्रह्म के लक्षणों से युक्त यह कथन मैं तुमसे कहता हूँ। सबसे परे रहने वाले वे परब्रह्म यत्नपुर्वक चिन्तन करने एवं स्मरण करने योग्य हैं।

पुत्र स्नेहात्तवैवाग्रे कथितं परमाद्भुतम् ।
मनसा ध्याय तत्तेजोरुपं संचिन्तयन्स्वयम् ॥

॥ 20 ॥

हे पुत्र! तुम्हारे स्नेह के कारण ही मैंने यह अत्यन्त अद्भुत ज्ञान तुमसे कहा है। परब्रह्म के उस तेजोमय स्वरुप का स्वयं ही अपने मन से चिन्तन करते हुए ध्यान करो।

Nijanand App

न दुखं यत्र नो चिन्ता न सुखस्य परिज्ञता ।
नो शरीरस्य सद्ज्ञानं यत्रैवं खलु वर्तते ॥

॥ 21 ॥

जिसके हृदय में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का स्वरुप विराजमान होता है, उसके मन में दुःख या चिन्ता नहीं होती हैं, और उसे लौकिक सुख का पूर्ण ज्ञान भी नहीं रहता और न उसे अपने शरीर का ही वास्तविक ज्ञान रहता है अर्थात् वह सुख-दुःख, हर्ष-शोक एवं शरीर के मोह जनित द्वन्दों से परे हो जाता है।

ज्ञानहर्ष समुद्रे वै जगन्मग्नं भविष्यति ।
तत्स्वरुपं जगत्सर्वं ज्ञातव्यं नात्र संशयः ॥

॥ 22 ॥

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के प्रकट होने से यह जगत ज्ञान और आनन्द के सागर में डूब जायेगा तथा यह सम्पूर्ण जगत उस योगमाया (बेहद) के ब्रह्माण्ड में जानने योग्य जागृत एवं अखण्ड स्वरुप वाला हो जायेगा। इसमें कोई भी संशय नहीं है।

बुद्धौ वै कल्किरुपोसावीश्वरं च परात्परम् ।
ज्ञानपारं प्रापयिता संभविष्यति निश्चितम् ॥

॥ 23 ॥

वह बुद्ध जी ही अपने दूसरे तन के स्वरुप में 'कल्कि' नाम से कहलायेंगे। (बुद्ध जी का पहला तन श्री देवचन्द्र जी का तथा दूसरा तन श्री मेहराज जी का होगा)। वह ही आदिनारायण को भी अखण्ड धाम का सर्वोच्च ज्ञान देने वाले होंगे। ऐसा निश्चित है।

हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर ।
बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर ।।
खबर देसी भली भातें, विष्णु जागसी तत्काल ।
तब आवसी नींद इन नैनों, प्रले होसी पंपाल ।।

क0 हि0 23/97,98

ईश्वरोऽपि स्वयं यस्माज्ज्ञानपारं समालभेत् ।
बुद्धरुपो भविष्येत नात्र कार्या विचारणा ।।

।। 24 ।।

स्वयं आदि नारायण भी जिन बुद्ध जी से निराकार से परे का ज्ञान प्राप्त करने वाले हैं और ऐसा करके वे भी योगमाया के ब्रह्माण्ड में जागृत एवं अखण्ड स्वरुप वाले हो जायेंगे। इस कथन में संशय जैसी कोई भी बात करने योग्य नहीं है

Nijanand App

बुद्धः कैवल्यरुपोऽसौ संमथ्य भवसागरम् ।
पंच रत्नानि संप्राप्य स्वयं तेजोमयो विभुः ।।

।। 25 ।।

वे श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही मोक्ष के स्वरुप हैं अर्थात् सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देने वाले हैं। इस भवसागर को मथकर वे पांच रत्नों शिव, सनकादि, कबीर, शुकदेव और विष्णु भगवान को निकालकर स्वयं तेजोमय परब्रह्म के रुप में अपनी महिमा से व्यापक होंगें।

ए दसों दिस लोक चौद के, विचार देखे वचन ।
मोह सागर मथ के, काढ़े सो पांच रतन ।।

क0 हि0 18/6

एक भगवान जी बैकुंठ को नाथ, महादेवजी भी इनके साथ ।
सुकजी और सनकादिक दोए, कबीर भी इत पोहोंच्या सोए ।।

प्र0 हि0 34/14

यथा पूर्वं हि संमथ्य विष्णुना सागरं पुरा ।
चतुर्दशैव रत्नानि संनीतानि सुत शृणु ।।

।। 26 ।।

हे पुत्र सुनो! जिस प्रकार बहुत पहले प्राचीन काल में विष्णु भगवान ने समुद्र को मथ कर 14 रत्न निकाला था,

तथा तेनैव बुद्धेन संमथ्य भवसागरम् ।
पंच रत्नानि नीतानि ज्ञातव्यं नात्र संशयः ॥

॥ 27 ॥

उसी प्रकार उन बुद्ध जी के द्वारा इस भवसागर को मथकर जानने योग्य अक्षर ब्रह्म की पांच रत्न रुप सूरताओं को निकाला जायेगा। इस कथन में कोई भी संशय नहीं हैं। (भवसागर को मथने का तात्पर्य यह है कि इस अथाह मोहसागर में केवल पांच सूरताओं के ही वचन निराकार (नींद) से परे के हैं। सार-असार तत्व का मंथन ही भवसागर का मन्थन है।

भजनीयः परः साक्षात्पुरुषो ज्ञानरुपधृक् ।
लक्ष जिह्वोपि संजल्पन बुद्धो धामस्वरुपधृक् ॥

॥ 28 ॥

बेहद् से परे स्थित उस परम पुरुष के साक्षात् ज्ञानमयी स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही सबके द्वारा भजन करने योग्य हैं। संसार के सभी धर्म-ग्रन्थ रुपी लाखों जिह्वायें होते हुए भी (मर्मज्ञ होते हुए भी) सबके आश्रय स्वरुप वह बुद्ध जी तुतली (बोलचाल की सामान्य) भाषा

Nijanand App

में अपना ज्ञान देने वाले होंगे।

बोले न मेंहेंदी एक जुबां, जुबां बोले कई लाख ।
आगे बिना जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख ॥
खेल में मेंहेंदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर ।
आगे जो नूर तजल्ला, तहां जुबां बोल है और ॥

सनंध 39/3,4

कलपादौ संभविष्येत बुद्धो बुद्धिकरः परः ।
तस्मात्पुत्र प्रयत्नेन भजस्व परमं महः ॥

॥ 29 ॥

अखंड धाम की जागृत बुद्धि देने वाले वे बुद्ध जी वाराह कल्प के 28 वें कलियुग के प्रारम्भ में प्रकट होंगे। इसलिये हे पुत्र! तुम यत्नपुर्वक परम आभा (तेजोमयी स्वरुप) वाले परब्रह्म के स्वरुप उन बुद्ध जी का भजन करो।

नोट- अट्ठाइसवें कलियुग के प्रारम्भ में अक्षरातीत परब्रह्म श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरुप 'श्री प्राणनाथ जी' के रुप में प्रकट हुए हैं, न कि श्रीकृष्ण के नाम से ।

भक्तानामपि भक्तोसि त्वमेनं बोधयिष्यसि ।
बोधयित्वा परे धाम्नि संलीनो भव नारद ॥

॥ 30 ॥

हे नारद! तुम भक्तों के भी भक्त हो अर्थात् भक्तों में श्रेष्ठ हो। इस परम रहस्यमयी तत्व को तुम समझ लोगे। इसका ज्ञान प्राप्त करके तुम उस अखंड धाम के ध्यान में तल्लीन हो जाओ।

एतज्ज्ञात्वा परं तत्वं तत्वरुपी स्वयं भव ।
तत्वात्परतरं नास्ति तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥

॥ 31 ॥

हे पुत्र! इस परम तत्व को जानकर तुम स्वयं ही परम् तत्व का स्वरुप बन जाओ अर्थात् अखण्ड धाम को प्राप्त करो। इस रहस्यमयी परब्रह्म विषयक तत्व से श्रेष्ठ अन्य कुछ भी नहीं है। तुम्हारे स्नेह के कारण ही इसे मैंने तुमसे कह दिया है।

मनः स्वरुपं विष्णोश्च वदन्ति भुवि ये बुधाः ।
तस्मात्पुत्र प्रयत्नेन मनस्येनं प्रधारय ॥

॥ 32 ॥

पृथ्वी पर जो भी ज्ञानी हैं, वे तुम्हें विष्णु भगवान के मन का स्वरुप कहते हैं। इसलिए हे पुत्र! इस तत्वज्ञान को यत्नपुर्वक अपने मन में धारण करो।

Nijanand App

वेदें नारद कह्यो मन विष्णु को, जाको सराप्यो प्रजापत।
राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत ॥

खुलासा 12/47

वेद निन्दा पुराणानां द्विजानां च गवांस्तथा ।
कन्याकाले प्रसूतिश्च यदा पुत्र भविष्यति ॥

॥ 33 ॥

हे पुत्र! जब वेदों, पुराणों, ब्राह्मणों तथा गायों की निन्दा होने लगेगी और कन्यावस्था की उम्र में ही सन्तानें उत्पन्न होने लगेंगी, तब श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी प्रकट होंगे।

प्रासादपतनं चैव तीर्थानां च यदाप्युत ।
तदा बुद्धो भविष्येत हीति मे निश्चया मतिः ॥

॥ 34 ॥

जब यवनों (मुसलमानों) के द्वारा मन्दिरों को गिराया जाने लगेगा तथा तीर्थों की महिमा भी कम होती जायेगी, तब श्री बुद्ध जी का प्रकटन होगा। ऐसी मेरी निश्चित धारणा है।

पुत्र त्वं ज्ञानवांश्चैव वर्तसे नात्र संशयः ।
मनसा ध्याय मत्प्रोक्तं स्वयं तेजोमयो विभुः ॥

॥ 35 ॥

हे पुत्र नारद! निश्चय ही तुम ज्ञानवान हो। इसमें कोई भी संशय नहीं है। इसलिये मेरे द्वारा कहे हुए परब्रह्म स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का ध्यान करो, जिससे स्वयं तुम भी तेजोमय परमात्मा की तरह अखण्ड स्वरुप वाला बन सको।

नोट- यद्यपि जीव ब्रह्म नहीं बन सकता, किन्तु ब्रह्म का साक्षात्कार करके लौह-अग्निवत् गुण धर्म को प्राप्त कर लेता है, अर्थात् योगमाया के अखण्ड ब्रह्मधाम में ब्रह्म से अभेदता की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। यहाँ पर भी नारद जी के लिये यही सिद्धान्त लागू होता है।

एतत्सर्वं समन्ताच्च तेजोरुपं भविष्यति ।
जगच्चराचरं चैव हीति मे निश्चया मतिः ॥

॥ 36 ॥

यह चर अचर सम्पूर्ण जगत ही चारों ओर से अक्षर ब्रह्म के बेहद धाम में अखण्ड एवं तेजोमय रुप वाला हो जायेगा। ऐसी मेरी निश्चित धारणा है

पुत्र स्नेहात्तवैवाग्रे कथितं परमं पदम् ।
रहस्यं यत्परं देवैर्दुर्लभं खलु गीयते ॥

॥ 37 ॥

हे पुत्र! तुम्हारे स्नेह के कारण इस परम पद का वर्णन

Nijanand App

मैंनें तुम्हारे सामने कर दिया है। निश्चय ही यह सर्वश्रेष्ठ रहस्यमयी तत्वज्ञान देवताओं के लिये भी दुर्लभ कहा जाता है।

क्रीडयिष्यति तद्रूपं बुद्धस्य सखिभिः समम् ।
सख्यस्ताः श्रुतिरुपिण्यो ज्ञातव्याश्च त्वया सदा ॥

॥ 38 ॥

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का वह स्वरुप परमधाम की सखियों (ब्रह्म मुनियों) के साथ जागनी रास की लीला करेगा। वे सखियां श्रुतियों का स्वरुप हैं, अर्थात् जिस प्रकार वेद की ऋचायें वेद का ही स्वरुप होती हैं, उसी प्रकार परमधाम की आत्मायें अक्षरातीत का ही स्वरुप होती हैं। ब्रह्ममुनियों के रुप में प्रकट होने वाली वे सखियां तुम्हारे द्वारा हमेशा ही जानने योग्य हैं।

श्रुतिरुपिण्य एवैता आदिरुपेण क्रीडया ।
बुद्धरुपे स्वयं व्याप्ता बुद्धस्तासु न संशयः ॥

॥ 39 ॥

श्रुतियों के समान पवित्र स्वरुप वाली वे सखियां, अक्षरातीत के साथ क्रीड़ा करती हुई उनके बुद्धमय स्वरुप में स्वयं व्याप्त हैं तथा श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी भी उनके अन्दर व्यापक हैं। इस कथन में कोई भी संशय नहीं हो

सकता है।

गौर वर्णो विभेदेभ्यो रहितः केवलो विभुः ।
समांगो निर्विकारश्च कल्पादौ संभवेद्यदा ॥

॥ 40 ॥

श्री बुद्ध जी का स्वरुप विशुद्ध गौरवर्ण का होगा, अर्थात् उनके यश में किसी भी प्रकार की कालिमा नहीं होगी। वे सभी प्रकार के भेदभाव से रहित, समदर्शी, एवं अद्वितीय परब्रह्म के स्वरुप होंगे। वे समान अंगों वाले अर्थात् ऊँच-नीच की भावना से रहित और मायावी विकारों से पूर्णतया रहित होंगे। ऐसे लक्षणों वाले श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी कल्प के प्रारम्भ अर्थात् अट्ठाइसवें कलियुग के प्रथम चरण में ही प्रकट होने वाले हैं।

तदा वेदमयः सैव पुरुषो देवमयः स्वयम् ।
तस्य भक्तिर्जगत्येका नान्यत्किंचित्प्रवर्तते ॥

॥ 41 ॥

उस समय एक मात्र श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी ही वेद के समान सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार होंगे तथा स्वयं वे ही आनन्दमय परब्रह्म के रुप में जाहिर होंगे। उस समय संसार में केवल उन्हीं के स्वरुप की भक्ति होगी तथा मायावी फल देने वाले देवी-देवताओं के जप, तप, यज्ञ आदि

Nijanand App

उपासना की कोई भी विधि प्रचलित नहीं होगी।

महता चैव कालेन परं तत्वं प्रलभ्यते ।
मत्तो लब्ध्वा परं तत्वं तत्वरुपी स्वयं भव ॥

॥ 42 ॥

बहुत अधिक समय तक योग एवं ज्ञान का अभ्यास करने पर इस परम् तत्व का ज्ञान प्राप्त होता है। परब्रह्म विषयक इस परम तत्व का ज्ञान प्राप्त करके तुम भी स्वयं उसका स्वरुप बन जाओ।

पुत्र तत्वस्य माहात्म्यं वक्तुं नैव हि शक्यते ।
वयं चैवात्र तत्रैव ह्यक्षरातीतसंज्ञितम् ॥

॥ 43 ॥

हे पुत्र! इस परम तत्व की महिमा शब्दों में नहीं कहीं जा सकती है। हम सब देवगण तो यहां-वहां (निराकार - योगमाया) में ही रह जाते हैं, किन्तु उस परम तत्व का नाम अक्षरातीत है।

नोट- महाप्रलय में सभी देवगण आदि नारायण में लीन हो जाते हैं, किन्तु त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) की परआतम का स्थान अक्षर ब्रह्म के बेहद मण्डल में सबलिक के स्थूल सुमंगला-पुरुष में है। महाप्रलय में त्रिगुण अपने उसी अखण्ड स्थान में चले जाते हैं।

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुण की परआतम।।

किरंतन 65/10

न जानन्ति च तत्रैव ह्यंशा कैवल्यरुपिणः ।
कथं त्वन्ये प्रजानन्ति ऋषयः शौनकादयः ॥

॥ 44 ॥

बेहद धाम में स्थित ब्रह्म के तेजोमयी स्वरुप के प्रतिबिम्बित अंश कहे जाने वाले कैवल्य के स्वरुप जब हम लोग उस अक्षरातीत परब्रह्म को नहीं जानते हैं, तो दूसरे शौनक आदि ऋषि भला क्या जान सकते है?

सनकादि ऋषयः सर्वे मुनयश्च तथा स्मृताः ।
ये चान्ये बहवः पुत्र लयं प्राप्ता न संशयः ॥

॥ 45 ॥

हे पुत्र! सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार आदि महान ऋषि तथा सभी मुनि एवं अन्य दूसरे भी योगी सुने जाते हैं, किन्तु वे भी महाप्रलय में लय हो जाते हैं। इस बात में कोई भी संशय नहीं है।

निद्रायां च स्वयं जाता लयं प्राप्ता न संशयः ।
परं बुद्ध स्वरुपं यत्तज्ज्ञाते धाम रुपिण : ॥

॥46॥

Nijanand App

स्वयं निद्रा (निराकार, अज्ञान) में उत्पन्न होने वाले सभी प्राणी महाप्रलय के समय पुनः उसी में लय हो जाते हैं। किन्तु परब्रह्म स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का ज्ञान हो जाने पर सभी प्राणी अखण्ड धाम में विराजमान हो जायेंगे।

अचरा धामरुपाश्च संभविष्यन्ति निश्चितम् ।
जाते बुद्ध स्वरुपे वै ऋषिणां चैव का कथा ॥

॥ 47 ॥

श्री बुद्ध जी के प्रकट हो जाने पर जब इस ब्रह्माण्ड के स्थिर रहने वाले जड़ पदार्थों का भी अखण्ड धाम में स्थित होना निश्चित है, तो चेतन स्वरुप वाले ज्ञानी ऋषियों की बात ही क्या है? अर्थात् उन्हें तो अनिवार्य रुप से अखण्ड बेहद धाम में अविनाशी स्वरुप मिलेगा ही।

वेदों कहया आवसी, बुध ईस्वरों का ईस ।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस ॥

खुलासा 12/31

पशुश्चैवापशुश्चैव चरश्चाचर एव च ।
यद्यन्निद्रागतं पुत्र तत्सर्वं धाम रुपिणं ॥

॥ 48 ॥

हे पुत्र! श्री बुद्ध जी की कृपा से पशु और अपशु, चर

हे पुत्र! जब वह शब्दातीत है, तो उसके विषय में अब फिर क्या कहा जा सकता है? उसके परे और कुछ भी नहीं है। मैंने जिस अखण्ड होने वाले जगत का वर्णन किया है, उस अखण्ड रुप धाम में न तो कोई अंश रुप होगा और न कोई वियोग की अवस्था में होगा, बल्कि सब कुछ माया रहित हो जायेगा।

संलक्ष्य हृदि तत्तत्वं पुरुषं परमेश्वरं ।
धाम धामानि संस्पृश्य धाम धाम्नि प्रलीयते ॥

॥ 54 ॥

उस परम तत्व रुपी परब्रह्म परमेश्वर को अपने हृदय में पहचान कर ज्ञानमयी दृष्टि से उनके धामों का स्पर्श कर अर्थात् अनुभव करके अखण्ड होने वाला प्राणी ब्रह्म के उस अखण्ड धाम (योगमाया) में स्थित हो जाता है।

नमस्तस्मै विहीनाय गुणैश्च गुणकर्मभिः ।
अतीताय परेशाय नमः शान्तिस्वरुपिणे ॥

॥ 55 ॥

सत्व, रज तथा तम इन तीनों गुणों तथा इनके कारण होने वाले कर्मो से रहित, सबसे अतीत, अक्षर ब्रह्म के भी स्वामी, शान्ति स्वरुप उन श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी को प्रणाम है।

Nijanand App

न सांख्यं नैव वेदान्तो मीमांसा नैव दृश्यते ।
यत्र वै ज्ञानता नास्ति तस्मै धाम्ने नमो नमः ॥

॥ 56 ॥

परब्रह्म स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के विषय में न तो सांख्य दर्शन की ही गति है, न वेदान्त की और न मीमांसा दर्शन की, अर्थात् ये शास्त्र उस अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म की स्पष्ट पहचान नहीं करा सकते हैं। जिनके स्वरुप में किसी भी प्रकार से माया की गम नहीं है; सबके आश्रय स्वरुप ऐसे बुद्ध जी को प्रणाम है।

नमो नमः सुशान्ताय दीप्तिरुपाय तेजसे ।
विधिहीनाय कांताय जगतः कांतिरुपिणे ॥

॥ 57 ॥

अत्यधिक सुन्दर एवं शान्ति स्वरुप, ज्ञानमयी दीप्ति से भरपूर, तेजोमय स्वरुप वाले, लौकिक कर्मकाण्डों का पालन न करने वाले, सुख स्वरुप, संसार को ब्रह्मज्ञान की आभा से भरपूर करने वाले उन श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी को प्रणाम है।

स्वामीभूताय जगतो भर्तृत्वविधिभाविने ।
वाजिस्थायैव सद्बुद्धया कीर्तिताय नमो नमः ॥

॥ 58 ॥

सम्पूर्ण जगत के स्वामी, अपनी आत्माओं के प्रति पतिपने के सम्बन्ध को निभाने वाले, जागृत बुद्धि रुपी घोड़े पर विराजमान होकर निज बुद्धि के ज्ञान की महिमा से भरपूर उन परब्रह्म स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी को प्रणाम है।

श्वेतवर्णे च तीव्रे च चंचले ह्यंश रुपिणे ।
कृतासनाय पूर्णाय पुनस्तस्मै नमो नमः ॥

॥ 59 ॥

तीव्र वेग से गमन करने वाले अपने अंश रुप श्वेत रंग के चंचल घोड़े अर्थात् सभी धर्म ग्रन्थों के रहस्य को स्पष्ट करने वाली एवं संशय रहित करने वाली जागृत बुद्धि एवं निज बुद्धि पर सवार पूर्ण ब्रह्म के स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक श्री प्राणनाथ जी को बारम्बार प्रणाम है।

वाजिः सैवादिरुपो वै संभविष्यति निश्चितम् ।
भूतानि तत्वरुपाणि कल्केश्चैव का कथा ॥

॥ 60 ॥

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का वह घोड़ा भी उन्हीं का स्वरुप (योगमाया में) हो जायेगा। यह निश्चित है। जब सभी प्राणी तथा पंच तत्व भी बेहद भूमिका में अखण्ड स्वरुप वाले हो जायेंगे, तो कल्कि नामक उस घोड़े की

Nijanand App

बात ही क्या है?

महाप्रलय के पश्चात् बेहद भूमिका के अन्दर सत्स्वरुप की पहली बहिश्त में न्याय की लीला होगी। उसमें श्री मेहराज जी का जीव श्री राज जी के स्वरुप की नकल का रुप बनेगा तथा श्री देवचन्द्र जी का जीव श्यामा जी के स्वरुप की नकल का रुप बनेगा। सभी ब्रह्मसृष्टियों के जीव परमधाम की आत्माओं के स्वरुप की नकल का रुप बनेंगे और इनके द्वारा परमधाम की लीला की नकल होती रहेगी। इस बहिश्त में श्री राज जी का रुप बने हुए श्री मेहराज जी के जीव के अन्दर अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (घोड़ा) विराजमान होकर सबका न्याय करेगी। इस प्रकार जागृत बुद्धि को भी योगमाया में परब्रह्म का स्वरुप कहलाने की शोभा मिलेगी।

तदारुढ़ो स्वयं विश्वस्रग्बुद्धो विराजितः ।
विश्वे विश्वस्वरुपोऽसौ पुरुषः परमेश्वरः ॥

॥ 61 ॥

अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि रुपी घोड़े पर, अपने आदेश से विश्व को बनवाने वाले श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी विराजमान होंगे। इस विश्व में एकमात्र वे ही सभी चेतन प्राणियों के आधार स्वरुप एवं परब्रह्म रुप पुरुष होंगे।

पुत्र नैवात्र संदेहस्त्वया कार्यश्च धीमता ।
संशयं मनसश्छित्वा गोपाय त्वं हृदि स्वयम् ॥

॥ 62 ॥

हे पुत्र! तुम स्वयं बुद्धिमान हो। इसलिये तुम्हें इस सम्बन्ध में संशय नहीं करना चाहिए। अपने मन के संशय को दूर करके तुम इस तत्वज्ञान को अपने हृदय में गुप्त रखो ।

भक्तिमान्मोहरहितः सद्य एव स्वयं भव ।
मोहं तीर्त्वा विमोहः सन्मोहातीतः स्वयं भव ॥

॥ 63 ॥

हे पुत्र! तुम शीघ्र ही भक्तिमान एवं मोह से रहित हो जाओ। तुम मोह का त्याग करके मोहरहित हो जाओ एवं मोह से परे स्वरुप वाले अक्षर ब्रह्म के बेहद धाम में तुम स्वयं अखण्ड होने की स्थिति को प्राप्त करो।

मोह सागरतो भिन्नो यदा जन्तुः स्वयं भवेत् ।
सत्वैवाक्षररुपश्च ह्यक्षरातीत एव सः ॥

॥ 64 ॥

यदि कोई प्राणी अपने को इस मोह सागर से अलग कर ले, तो वह शीघ्र ही बेहद धाम में अखण्ड स्वरुप की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। बेहद में सर्वत्र अक्षर ब्रह्म

Nijanand App

का ही स्वरुप व्यापक है। और वह अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म के ही सत अंग हैं, अर्थात् दोनों का स्वरुप एक ही है।

अतो न्यासं प्रवक्ष्यामि देहे वैदेहसंज्ञितम् ।
न्यासं बिना न कर्तव्यो जपो वैदेहकारकः ॥

॥ 65 ॥

अब मैं शरीर में विदेह नामक न्यास के विषय में कहता हूँ। (किसी मन्त्र के अक्षरों का शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में स्थापना करना न्यास कहलाता है) मन्त्र का न्यास किये बिना कभी भी जप नहीं करना चाहिये। श्री बुद्ध जी के मन्त्र का जाप विदेह अवस्था की अखण्ड मुक्ति को देने वाला है

अस्य वै बुद्धमंत्रस्य ज्ञानानन्दो ऋषिः स्मृतः ।
देवता बुद्धरुपं च कीलकं ज्ञान संभवः ॥

॥ 66 ॥

श्री बुद्ध जी के इस मन्त्र के ऋषि ज्ञानानन्द हैं। बुद्ध जी देवता हैं और ज्ञान का उत्पन्न होना इस मन्त्र का कीलक (स्तम्भ) है।

ललाटं पातु बुकारो ब्रह्मरंध्रं द्धयारहः ।
ज्ञाकारो हृदयं पातु नकारो नाभिदेशकम् ॥

॥ 67 ॥

'बु' अक्षर ललाट की रक्षा करे। 'द्धाय' ब्रह्मरन्ध्र की रक्षा करने वाला हो। 'ज्ञा' अक्षर हृदय की रक्षा करे तथा 'न' अक्षर नाभि भाग की रक्षा करे।

रुकारो नेत्रयुग्मं च पाकारो नासिकां ह्यपात् ।
यकारः पादयुग्मंच द्वितीयो हस्तयुग्मकम् ॥

॥ 68 ॥

'रु' दोनों नेत्रों की रक्षा करे। 'पा' नासिका की रक्षा करे। 'य' दोनों पैरों की और नमः दोनों हाथों की रक्षा करे। (सम्पूर्ण मन्त्र इस प्रकार है-बुद्धाय ज्ञानरुपाय नमः)।

द्विपदं द्विभुजं चैव त्रिनेत्रं मनसा स्मरेत।
गौरवर्णं ज्ञानरुपं ध्यात्वा धाम्नि परं स्मरेत

॥ 69 ॥

दो चरणों वाले, दो भुजाओं वाले, तथा तीन नेत्रों से युक्त उन बुद्ध जी का मन से स्मरण करना चाहिए। (स्वसंवेद, श्री कुलजम स्वरुप की वाणी ही उनका तीसरा ज्ञान नेत्र है) परमधाम में विराजमान परब्रह्म के स्वरुप, गौर वर्ण वाले, निज बुद्धि के ज्ञान स्वरुप उन श्री विजयाभिनन्द

Nijanand App

बुद्ध जी का ध्यान करके उनका स्मरण करना चाहिए।

प्रातरुत्थाय यः पुत्र पठेत् गीतां समाहितः ।
जपेद्धामं परं ज्योतिस्तद्रूपोसौ भवेन्नरः ॥

॥ 70 ॥

हे पुत्र। प्रातः उठ कर जो भी मनुष्य इस बुद्ध गीता का पाठ एकाग्र मन से करे तथा सबके आश्रय स्वरुप एवं सर्वश्रेष्ठ ज्ञानमयी ज्योति के स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का जप करे, तो वह भी उनके ही समान जागृत ज्ञान से युक्त हो जाय। (यद्यपि अक्षरातीत परब्रह्म के समान कोई भी प्राणी नहीं बन सकता है, किन्तु इस श्लोक में 'तद्रूप' कहने का भाव जागृत ज्ञान से युक्त होकर बेहद में अखण्ड हो जाने से है।)

श्रवणाद्धारणादस्याः कीर्तनाद्दर्शनात्तथा ।
यद्यन्मनसि चिन्तेत तत्पदं समवाप्नुयात् ॥

॥ 71 ॥

इस बुद्ध गीता के श्रवण करने, हृदय में धारण करने, कीर्तन करने (गाने) तथा दर्शन करने से मन में जिस भी पदार्थ का चिन्तन करे, तो वह उसे अवश्य ही प्राप्त कर सकता है।

बुद्धगीता परं नास्ति स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम् ।
यस्याः संस्मरणादेव मुक्तिरेव न संशयः ॥

॥ 72 ॥

बुद्ध गीता से श्रेष्ठ अन्य कोई भी स्तोत्र मोक्ष के साधन रुप में नहीं है, जिसके स्मरण मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होती है। इस बात में किसी भी प्रकार का संशय नहीं है।

बुद्धगीता मया ख्याता यस्यां गीतं परं महः ।
महसा वेष्टितः पुत्र महोरुपः स्वयं भव ॥

॥ 73 ॥

यह बुद्ध गीता मेरे द्वारा कही गयी है, जिसमें परम तेजोमय श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का वर्णन किया गया है। हे पुत्र! तुम उन बुद्ध जी के भक्ति रस में डूबकर स्वयं भी उनकी तरह जागृत ज्ञान से युक्त हो जाओ, अर्थात् बेहद भूमिका में अखण्ड स्वरुप वाले हो जाओ।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं किम् पुनः प्रोच्यते मया ।
तवैवाग्रे मया ख्याता ह्यन्यस्याग्रे च गोपिता ॥

॥ 74 ॥

परब्रह्म स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध विषयक यह बुद्ध गीता सत्य है, सत्य है। पुनः मैं यह कहता हूँ कि यह

Nijanand App

बुद्ध गीता सत्य है। पुनः इसके भी परे और क्या है, जिसे मैं तुमसे कहूँ ? मैंने अब तक इसे दूसरों से छिपा कर रखा था, केवल तुम्हारे सामने ही मैंने इसका वर्णन किया है।

इस प्रकार भविष्योत्तर पुराण के अन्तर्गत 'वैष्णव प्रसार उद्धार' में ब्रह्मा जी एवं नारद जी के वार्तालाप में वर्णित यह बुद्ध गीता समाप्त हुई।

अथ् बुद्ध स्तोत्रम्

ऊँ नमः ऊँ नमौ वै बुद्धरुपाय कलंकिता (कल्किता) यै व ऊँ नमः ऊँ नमः ऊँ नमो धाम रुपाय वै शान्ति रुपाय वै ते नमस्ते नमः ।

॥ 1 ॥

अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि से युक्त उन श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक जी को प्रणाम है। सभी आत्माओं के धाम स्वरुप तथा शान्ति के स्वरुप श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी को प्रणाम है।

॥ पार्वत्युवाच ॥

पार्वती जी ने कहा–

ईश्वर परमेशान जगदानन्ददायक ।
वद मां त्वं परं धाम ज्ञान रुपं यदीर्यते ॥

॥ 2 ॥

संसार को आनन्द देने वाले हे महेश्वर! जो ज्ञानस्वरुप, एवं सर्वोत्तम धाम कहा जाता है, उसे आप मुझसे कहिए ।

Nijanand App

श्री महादेव उवाच

श्री महादेव जी ने कहा –

तवाग्रे संप्रवक्ष्यामि पार्वति प्राणवल्लभे ।
अनुग्रहात्तवैवैषा संजाता बुद्धिरुत्तमा ॥

॥ 3 ॥

प्राणों से भी अधिक प्रिया हे पार्वती! तुम्हारे प्रश्न करने रुपी कृपा से मेरे अन्दर, परम तत्व सम्बन्धी उत्तम बुद्धि उत्पन्न हुई है। अतः मैं इसे केवल तुम्हारे ही सामने कह रहा हूँ।

युगानां च कलिर्धन्यः पशूनां धेनुरुत्तमा ।
वर्णानां च यथा विप्रस्तथा त्वं योषितामुमे ॥

॥ 4 ॥

हे उमा! चारों युगों में यह कलियुग धन्य है और पशुओं में गाय उत्तम है। चारों वर्णो में ब्राह्मण श्रेष्ठ है तथा स्त्रियों में तुम श्रेष्ठ हो । (परब्रह्म के इस कलियुग में प्रकट होने के कारण ही इसकी महत्ता है, अन्यथा नहीं।)

कलेरादौ समुत्पन्नं भविष्यति परं महः ।
सहसा ज्ञान रुपेण ज्ञानरुपा स्वयं भव ॥

॥ 5 ॥

कलियुग के प्रथम चरण में वह सच्चिदानन्द परब्रह्म अचानक ही ज्ञान रुप से प्रकट होंगें, जिनके ज्ञान को प्राप्त करके तुम स्वयं भी ज्ञानमयी हो जाना।

निराकारं वदंत्येके परं मायाविमोहिताः ।
एतद्धामं न जानन्ति यत्कलौ संभविष्यति ॥

॥ 6 ॥

माया से मोहित होने वाले प्राणी उस परब्रह्म को निराकार कहते हैं। जिस परमधाम का ज्ञान कलियुग में प्रकट होगा। उसके विषय में वे नहीं जानते हैं।

कंचित्कालं स्वयं बुद्धो गुप्तगुप्तश्चरिष्यति ।
धाम रुपः स्वयं साक्षात्कारको नात्र संशयः ॥

॥ 7 ॥

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी स्वयं कुछ समय तक गुप्त रुप से पृथ्वी पर विचरण करेंगे। वे स्वयं ही परमधाम के ज्ञानमयी स्वरुप होंगे तथा सबको उसका साक्षात्कार कराने वाले होंगे। इस कथन में कोई भी संशय नहीं है।

जगति संशयं छित्वा प्रकाशः संभविष्यति ।
जगत्कार्यवशित्वेन नात्र कार्या विचारणा ॥

॥ 8 ॥

Nijanand App

उस समय संसार के सम्पूर्ण कार्य श्री बुद्ध जी की ही अधीनता में होंगे। इस प्रकार वे अपनी शक्ति से संसार के अज्ञानमयी संशय को नष्ट करेंगे, जिससे सर्वत्र ब्रह्मज्ञान का प्रकाश फैल जायेगा। इस कथन के विपरीत कोई दूसरी बात नहीं सोची जा सकती है।

प्रकाशभूतं जगदेव देवबुद्धस्वरुपो भवितेति निश्चितम् ।
नैवात्र संदिग्धपदं विचार्यं देवि त्वया ध्यानपदे निरुप्यताम् ॥

॥ 9 ॥

यह सम्पूर्ण जगत ही ज्ञान के प्रकाश से भरपूर, आनन्दमयी एवं जागृत स्वरुप वाला (योगमाया में) होने वाला है। मेरे इस वचन में संशय वाली कोई भी बात विचारने योग्य नहीं है। हे देवि! तुम्हें उन श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी के ध्यान में तल्लीन हो जाना चाहिए।

स्थावरं जंगमं चैव चेतनाचेतनं तथा ।
यत्किंचिद्भुवि वर्तेत् तत्सर्वं धामरुपधृक् ॥

॥ 10 ॥

इस पृथ्वी पर स्थिर, चलायमान, चेतन एवं जड़ आदि जितने भी पदार्थ स्थित हैं, वे सभी योगमाया के चेतन ब्रह्माण्ड में अखण्ड स्वरुप वाले हो जायेंगे।

धामरुपे जगद्व्याप्तं संभविष्यति सत्कलौ ।
एवं नान्यद्युगे देवि जायते वै कदाचन ॥

॥ 11 ॥

कलियुग में यह जगत निश्चित् रुप से अखण्ड स्वरुप वाले धाम में स्थित हो जायेगा। हे देवि! अन्य किसी भी युग में इस प्रकार की घटना नहीं हो सकती है।

अतो धन्यः कलिः प्रोक्तस्तवाग्रे देवि निश्चयात् ।
ज्ञानाच्चैव तू तत्सर्वं संलीनं तत्क्षणाद्भवेत् ॥

॥ 12 ॥

इसलिये हे देवि! तुम्हारे सामने मैंने जिस कलियुग का वर्णन किया है, वह धन्य है। श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक के ज्ञान से यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड होने वाला है

जगल्लीने न किंचिद्धि प्रलयश्च उदाहृतः ।
अस्मात्परतरं नास्ति तव स्नेहात्प्रकाशितं ॥

॥ 13 ॥

ब्रह्माण्ड के लीन हो जाने पर यहाँ कुछ भी नहीं बचता है। इसे ही महाप्रलय कहा जाता है। इससे परे और कुछ भी नहीं है। तुम्हारे स्नेह के कारण ही मैंने तुमसे यह बात कही है।

Nijanand App

त्वया स्नेहः परः कार्यो महसि च परावरे ।
परावरात्परं नास्ति ज्ञानिनां नात्र संशयः ॥

॥ 14 ॥

हे देवि! तुम्हें उस प्रकाश स्वरुप महान परब्रह्म के प्रति प्रेम करना चाहिए। ज्ञानियों के लिये उस परब्रह्म से श्रेष्ठ और कोई भी नहीं है। मेरे इस कथन में कोई भी संशय नहीं है।

पार्वत्युवाच-

पार्वती जी ने कहा-

देवदेव महादेव भक्तानां हितकारक ।
योगिनामेव तज्ज्ञानमथवा गृहवासिनाम्।।

॥ 15 ॥

भक्तों का हित करने वाले, देवताओं के भी देवता, हे महादेव जी! क्या बुद्ध जी का वह दिव्य ज्ञान केवल योगियों के लिये ही होगा, अथवा गृहस्थियों के लिये भी हो सकता है?

श्री महादेव उवाच

शंकर जी बोले-

देवि त्वं बुद्धिरुपासि कथं बोधो न जायते ।
समन्तान्मनः संशोध्य ज्ञानरुपा स्वयं भव ॥

॥ 16 ॥

हे देवि! तुम तो बुद्धि की स्वरुपा हो। तुम्हें मेरे कहने से बोध क्यों नहीं होता है? चारों ओर से मन को एकाग्र करके स्वयं ज्ञानमयी स्वरुप वाली हो जाओ।

ज्ञानदीपे प्रजाते वै को योगी को गृही स्मृतः ।
न योगो न जपश्चैव न तपोबलमुच्चयते ॥

॥ 17 ॥

हृदय में ज्ञान रुपी दीपक के जल जाने पर कौन योगी है और कौन गृहस्थ? इनमें भेद नहीं रहता है। इसके समान योग, जप या तप का बल भी नहीं कहा जा सकता है।

न भेदो वै ह्यभेदश्च ह्यग्नौ वा योषितासु च ।
वर्णावर्णमतिर्नास्ति तस्मात्परतरं न हि ॥

॥ 18 ॥

ज्ञान रुपी दीपक के जल जाने पर किसी भी प्रकार के भेद की कोई भी भावना नहीं रहती है। उस समय अग्नि में या स्त्रियों में भी कोई भी अन्तर नहीं दिखायी देता है। वर्ण और अवर्ण (ऊँच-नीच) की भी भेद वाली बुद्धि नहीं रहती है। इसलिए ऐसे दिव्य ज्ञान से श्रेष्ठ और कुछ भी

Nijanand App

नहीं है।

एतद्बुद्धस्य सद्रूपं तवाग्रे गदितं मया ।
चिन्तनीयं प्रयत्नेन स्मरणीयं परात्परम् ॥

॥ 19 ॥

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का वास्तविक स्वरुप मैंने तुम्हारे सामने वर्णन कर दिया है। सबसे परे रहने वाला वह परब्रह्म यत्नपूर्वक तुम्हारे द्वारा हमेशा चिन्तन एवं स्मरण करने योग्य हैं।

प्रातरुत्थाय यो देवि पठेद्बुद्धस्तवं महत् ।
अतीते परिलीयते नात्र कार्या विचारणा ॥

॥ 20 ॥

हे देवि! प्रातः उठकर जो भी व्यक्ति इस महान बुद्धस्तोत्र का पाठ करे तो वह सबसे परे विराजमान रहने वाले अविनाशी ब्रह्म में स्थित हो जाय! इस कथन में कोई भी संशय नहीं करना चाहिए।

अतः परतरं किं वै फलमुच्ये तवाग्रतः।
अतीतात्किंचनैवान्यद्वर्तते चेद्वदाम्यहम्॥

॥ 21 ॥

ब्रह्म के स्वरुप में स्थित हो जाने के फल से भी श्रेष्ठ

और क्या हो सकता है जिसे मैं तुम्हारे सामने कहूँ। क्या सबसे परे रहने वाले उस परब्रह्म से भी श्रेष्ठ कोई दूसरा है, जिसे मैं तुमसे कहूँ ?

इदं स्तोत्रं मया ख्यातं तवाग्रे धामरुपधृक् ।
पठित्वा धामरुपे वै लीयते नात्र संशयः ॥

॥ 22 ॥

परमधाम के स्वरुप का वर्णन करने वाला यह स्तोत्र मैंने तुम्हारे सामने कहा। इसको पढ़कर मनुष्य उस अखण्ड धाम (योगमाया) में स्थित होता है। इसमें कोई भी संशय नहीं है।

॥ इति श्री लिंग पुराणे उमा महेश्वर संवादे बुद्धस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

इस प्रकार लिंग पुराण में वर्णित शिव-पार्वती के संवाद रुप में यह बुद्ध स्तोत्र संपूर्ण हुआ।

Nijanand App